Semester II

Pedagogy History 7 A

Unit VI: Examination and Evaluation of History

a. Introduction
b. Meaning of Evaluation
c. Difference Between Evaluation And Measurement
d. Purpose of Evaluation
e. Techniques of Evaluation.
f. Essay Type Test.
g. New Type Tests or objective Type Tests
h. Types of objective Type Tests.
i. Defects of New Type Tests.
j. comparative study of objective Type And Essay Type Tests.
K. History Teacher And Evaluation Programme.
L. Specific Aims of History Teaching At The Secondary stage.

By.

Dr. Asha Kumari Gupta.

Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

(क) निबन्धात्मक परीक्षा
(ESSAY TYPE TEST)

हमारे देश में इस परीक्षा का अधिक प्रचलन है। इसमें बालकों को कुछ प्रश्नों का उत्तर निर्धारित समय के अन्दर निबन्ध के रूप में लिखना पड़ता है। इसमें बालकों की अभिव्यंजना-शक्ति, सुलेख, शैली, भाषा आदि का अधिक प्रभाव पड़ता

Scanned with CamScanner

है। इसके अतिरिक्त इसमें परीक्षक की मनोदशा (Mood) का भी प्रभाव रहता है। इसमें आत्मगत तत्त्व (Subjective element) की प्रधानता है।

प्रचलित परीक्षा-प्रणाली के दोष (Defects of the Existing Examination System)—इस प्रणाली में निम्नलिखित दोष पाये जाते हैं—

1. परीक्षा शिक्षा का एक साधन होनी चाहिए, परन्तु आजकल वह शिक्षा का लक्ष्य बन गयी है। बालक पढ़ते हैं शिक्षक पढ़ाते हैं किसलिए ? किस उद्देश्य से ? केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने व कराने के लिए।
2. यह केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित रहती है। बालक की वास्तविक प्रगति की पूर्ण जाँच नहीं कर पाती है।
3. परीक्षा विद्यार्थियों के लिए भयानक स्वप्न बन गयी है। इसने छात्रों के नैतिक स्तर को भी गिरा दिया है, क्योंकि परीक्षा उत्तीर्ण करना तथा कराना ही शिक्षा का मुख्य ध्येय हो गया है।
4. यह विद्यालय के कार्यों पर भी दूषित प्रभाव डालती है। सभी कार्य इसी की प्राप्ति के लिए न्यौछावर कर दिये आते हैं। यहाँ तक कि समय-तालिका, गृह-कार्य, पाठ्यक्रम आदि सभी उसी के द्वारा शासित किए जाते हैं।
5. यह छात्रों के मस्तिष्क में ज्ञान तो भर देती है, परन्तु उसका प्रयोग नहीं सिखाती है।
6. विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर भी यह निकृष्ट प्रभाव डालती है। वे परीक्षा के दिनों में खेलना-कूदना, अपने मित्रों से मिलना, पर्याप्त विश्राम करना, सोना आदि सबको तिलांजलि दे देते हैं।
7. परीक्षा में वैयक्तिक प्रभाव अधिक है। इसके अतिरिक्त छात्रों के लेख, विचार तथा लिखने के ढंग का भी प्रभाव पड़ता है। इसी कारण जाँचने तथा अंकों में विशेष विस्तार रहता है।
8. यह स्मरण-शक्ति पर अधिक बल देती है।
9. इसके द्वारा विद्यार्थियों के वास्तविक ज्ञान की जाँच नहीं हो पाती। इसमें अवसर की ही प्रधानता रहती है।
10. यह कोई वैज्ञानिक विधि नहीं है। यह सिंह का पद एक चूहे या बिल्ली को प्रदान कर देती है और शृंगाल का पद एक सिंह को।

भारत में प्रचलित मूल्यांकनाभिमुख प्रवृत्ति का परिणाम यह है कि बच्चों के माता-पिताओं, छात्रों तथा अध्यापकों के जीवन का मात्र एक ही लक्ष्य रह गया है—परीक्षा पास करना या परीक्षा पास कराना। यदि किसी भी क्रियाकलाप में मूल्यांकन का यह मसाला न हो तो अध्यापक के लिये यह पढ़ पाना कठिन होता है, क्योंकि बच्चों की उसमें रुचि नहीं होती और उनके माता-पिता ऐसे शिक्षक से गुस्सा होते हैं। ऐसी स्थिति में एक शिक्षक को विचार मात्र से ही एक चिढ़ा हुआ पिता कहता सुनाई देता है, "यह अध्यापक क्या कर रहा है ? क्यों समय बर्बाद कर रहा है ? इसको

Asha Kumari Gupta

Scanned with CamScanner

चाहिए बच्चों का ध्यान अध्ययन में लगाये। अध्यापन का अर्थ उसकी भाषा में शिक्षा नहीं, बल्कि पाठ्य-पुस्तकों की रटाई तथा परीक्षा है, इसके अलावा कुछ नहीं है। यही कारण है कि अच्छा अध्यापन व बालकों को सृजनात्मक व जिज्ञासु बुद्धि प्रदान करते हुए शिक्षित करना असम्भव हो गया है।

इस समय बालकों को भी मूल्यांकन की छूत लग गई है। अब उनके लिये एक ही अभिप्रेरण-शक्ति रह गई है—परीक्षा में अधिक अंक पाना। उनके पास पाठ्य-पुस्तक, सरल अध्ययन तथा नकल के अलावा किसी भी क्रियाकलाप के लिये समय नहीं है। नकल को रोकने या नकल के लिये सुविधा प्रदान करना आज हमारे जीवन के प्रमुख प्रश्न बन गये हैं।

परीक्षा की आवश्यकता (Need of Examination)—इस समस्त दोषों का अवलोकन करने के पश्चात् स्वतः ही यह प्रश्न उठता है कि इसको क्यों न समाप्त कर दिया जाय, तथापि यह परीक्षा अत्यन्त आवश्यक है। इसके निम्नलिखित कारण हैं—

1. छात्रों की योग्यता तथा उनके द्वारा प्राप्त किए हुए ज्ञान की जाँच करने के लिए यह आवश्यक है, क्योंकि माता-पिता यह देखना चाहते हैं कि उनका बालक अपने परिश्रम के अनुकूल लाभ प्राप्त कर रहा है या नहीं। इसकी सूचना परीक्षा के बिना प्राप्त नहीं हो सकती। समाज को भी इसी के द्वारा सन्तुष्ट किया जाता है।
2. पथ-प्रदर्शन के लिए परीक्षा परमावश्यक है।
3. सामाजिक तथा आर्थिक जीवन-स्तर स्थापित करने के लिए यह अनिवार्य है।
4. छात्रों में श्रेणी-विभाजन, चयन तथा उन्नति के लिए यह आवश्यक है।
5. सीखने की प्रक्रिया तथा शिक्षण को प्रोत्साहन देने के लिए भी इसकी आवश्यकता है।
6. शिक्षक, विधि, पुस्तक, पाठ्यक्रम तथा विषय-सूची की उपयोगिता की जाँच करने के लिए भी अत्यन्त अनिवार्य है।

सुधार के लिए सुझाव (Suggestions for Improvement)—इस प्रकार परीक्षा की आवश्यकता पर विचार करने के पश्चात् हम सकते है कि इसको समाप्त नहीं किया जा सकता है, वरन् इसमें सुधार प्रकट किए हैं। ये निम्नलिखित हैं—

1. वैयक्तिक प्रभाव को कम किया जाय। इसको कम करने के लिए नवीन प्रणाली के प्रश्न प्रयोग में लाये जायें।
2. परीक्षकों का चयन सतर्कता से किया जाय। इनमें उन्हीं शिक्षकों को रखा जाय तो उस विषय को पढ़ाते हों।
3. बाह्य-परीक्षा कम की जायें।
4. विद्यार्थियों का आन्तरिक अभिलेख (Record) रखा जाय और उनको कक्षोन्नति का आधार बनाया जाय।
5. प्रश्न ऐसे दिए जायें जो बालकों के विषय-सम्बन्धी समस्त ज्ञान को अधिक सफल बनाने में सहायक हों।

Scanned with CamScanner

6. शिक्षा तथा परीक्षा में सम्बन्ध हो। परीक्षा का भय उत्पन्न न करे, वरन् वे परीक्षा को अपना सहायक तथा मित्र समझें।
7. परीक्षा छात्रों में किसी प्रकार का भय उत्पन्न न करे, वरन् वे परीक्षा को अपना सहायक तथा मित्र समझें।
8. परीक्षाएँ निष्पक्ष हों और उनके द्वारा बालक की पूरी-पूरी जाँच की जाय। उसके शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक—सभी प्रकार के विकास की जाँच हो। दो परीक्षकों से वही परीक्षा-पुस्तिका जँचवानी चाहिए। छात्रों के उत्तरों का अंकन निष्पक्षता से किया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner